www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 7, 12-15

Article ID: 207

मक्के में लगने वाले प्रमुख कीट तथा नियंत्रण के उपाय

अरविन्द कुमार, राम वीर

कीट विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं
प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कुमारगंज, अयोध्या,
उत्तर प्रदेश-224229

मक्का एक बहपयोगी खरीफ, रवी, और जायद तीनों ऋतुओं में बोइ जाने वाली फसल है |
मक्के में कार्बोहाइड्रेट 70, प्रोटीन 10 और तेल 4 प्रतिशत पाया जाता है | जिसके कारण इसका उपभोग मनुष्य के साथ-साथ पशु आहार के रूप में भी किया जाता है | मक्के को कीटों से बचाने के लिए जरूरी यह है कि किसान भाइयों को मक्का फसल सही समय पर बोने, उन्नत किस्मों का चुनावह करने, उपयुक्त खाद देने और समय पर कीट रोकथाम करने के उपाय करने चाहिए | मक्का फसल को भी अन्य फसलों की तरह अनेक हानिकारक कीटों द्वारा नुकसान होता है |

तना छेदक-

पहचान एवं हानि- यह कीट मक्के के लिए सबसे अधिक हानिकारक कीट है | ध्यान देने वाली बात यह है कि इसकी सुण्डियां 20 से 25 मिमी. लम्बी और स्लेटी सफेद रंग की होती है | जिसका सिर काला होता है और चार लम्बी भूरे रंग की लाइन होती है | इस कीट की सूड़ियाँ तनों में छेद करके अन्दर ही अन्दर खाती रहती हैं | फसल के प्रारम्भिक अवस्था में प्रकोप के फलस्वरूप मृत गोभ बनता है, परन्तु बाद की अवस्था में प्रकोप होने पर पौधे कमजोर हो जाते है और भुटे छोटे आते हैं एवं हवा चलने पर पौधा बीच से टूट जाता है |

तना छेदक

नियंत्रण-

- खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करना चाहिए|
- मृत गोभ दिखाई देते ही प्रकोपित पौधों को भी उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए|
- इमिडाक्लोप्रिड 6 मिली. प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज शोधन करना चाहिए|
- मक्का फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए|
- मक्के की फसल लेने के बाद, बचे हुए अवहशेषों, खरपतवार और दूसरे पौधों को नष्ट कर दें|
- ग्रसित हुए पौधे को निकालकर नष्ट कर देंना चाइये|
- कीट के नियंत्रण हेतु 5 से 10 ट्राइकोकार्ड का प्रयोग करना चाहिये|
- तना छेदक और पत्ती लपेटक कीटों के लिए टाइकोग्रामा परजीवी 50000 प्रति हेक्टेयर की दर से अंकुरण के 8 दिन बाद 5 से 6 दिन के अन्तराल पर 4 से 5 बार खेत में छोड़ने चाहिए|
- 20 लीटर गौमूत्र में 5 किलो नीम की पत्ती 5 किलो धतुरा की पत्ती और 500 ग्राम तम्बाकू की पत्ती इस घोल का दो बार में 7 से 10 दिनों तक छिड़काव करना है|
- रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत, ई. सी0. 1.50 लीटर को 500 से 600 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये|

मक्का का कटुआ कीट-

पहचान एवं हानि- कटुआ कीट काले रंग की सूंडी है, जो दिन में मिट्टी में छुपती है | रात को नए पौधे मिट्टी के पास से काट देती है | ये कीट जमीन में छुपे रहते हैं और पौधा उगने के तुरन्त बाद नुकसान करते हैं | कटुआ कीट की गंदी भूरी सुण्डियां पौधे के कोमल तने को मिट्टी के धरातल के बराबर वाले स्थान से काट देती है और इस से फसल को भारी हानि पहुंचती है | सफेद गिडार पौधों की जड़ों कोनुकसान पहुंचाते हैं|

मक्का का कटुआ कीट

नियंत्रण-

- मक्का फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए|
- मक्के की फसल लेने के बाद, बचे हुए अवहशेषों, खरपतवार और दूसरे पौधों को नष्ट कर दें|
- ग्रसित हुए पौधे को निकालकर नष्ट कर देंना चाइये|
- खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करना चाहिए|
- इमिडाक्लोप्रिड 6 मिली प्रति किलोग्राम बीज दर से बीज शोधन करना चाहिए|

- मक्का फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए|
- इथोफेंपांक्स 10 ई.सी. एक लीटर प्रति हैक्टेयर 500 से 600 पानी में घोलकर 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें|

मक्का का सैनिक सुंडी-

पहचान एवं हानि- सैनिक सुंडी हल्के हरे रंग की, पीठ पर धारियॉ और सिर पीले भूरे रंग का होता है| बड़ी सुंडी हरी भरी और पीठ पर गहरी धारियाँ होती हैं | यह कुंड मार के चलती है | सैनिक सुंडी ऊपर के पत्ते और बाली के नर्म तने को काट देती है | अगर 4 सैनिक सुंडी प्रति वहर्गफुट मिलें तो इनकी रोकथाम आवहश्क हो जाती है |

मक्का की सैनिक सुंडी

नियंत्रण-

- खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करना चाहिए|
- इमिडाक्लोप्रिड 6 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज दर से बीज शोधन करना चाहिए|
- मक्का फसल में संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए|
- हर 7 दिन के अन्तराल पर फसल का निरीक्षण करना चाहिए|
- सैनिक सुंडी को रोकने के लिए 100 ग्राम कार्बरिल, 50 डब्लू .पी. या 40 मिलीलीटर फेनवेलर, 20 ई.सी. या 400 मिली क्वीनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. प्रति 100 लीटर पानी में घोल कर 12 से 15 दिनों के अन्तराल पर प्रति एकड़ छिड़काव करें |

फॉल आर्मीवर्म-

पहचान एवं हानि- यह एक ऐसा कीट है, जो कि एक मादा पतंगा अकेले या समूहों में अपने जीवन काल में एक हजार से अधिक अंडे देती है | इसके लार्वा मुलायम त्वचा वाले होते हैं, जो कि बढ़ने के साथ हल्के हरे या गुलाबी से भूरे रंग के हो जाते हैं | अण्डों का ऊष्मायन अवधि 4 से 6 दिन तक की होती है | इसके लार्वा पत्तियों को किनारे से पत्तियों की निचली सतह और मक्के के भुट्टे को भी खाते हैं | लार्वा का विकास 14 से 18 दिन में होता है | इसके बाद प्यूपा में विकसित हो जाता है, जो कि लाल भूरे रंग का दिखाई देता है | यह 7 से 8 दिनों के बाद वयस्क कीट में परिवर्तित हो जाता है | इसकी लार्वा अवस्था ही मक्का की फसल को बहुत नुकसान पहुंचती है |

फॉल आर्मी वर्म

नियंत्रण-

- समय पर बुवाई करना इसके लिए ज्यादा प्रभावी होता है|
- अनुशंसित पौध अंतरण पर बुवाई करें|
- संतुलित उर्वरकों का अधिक मात्रा में जैसे नाईट्रोजन की मात्रा का ज्यादा प्रयोग न करें|
- खेत में पड़े पुराने खरपतवार और अवशेषों को नष्ट करना चाहिए|
- मृत गोभ दिखाई देते ही प्रकोपित पौधों को भी उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए|
- मक्के की फसल लेने के बाद, बचे हुए अवहशेषों, खरपतवार और दूसरे पौधों को नष्ट कर दें|
- ग्रसित हुए पौधे को निकालकर नष्ट कर दें|
- कीट के नियंत्रण हेतु 5-10 ट्राइकोकार्ड का प्रयोग करना चाहिये|
- जिन क्षेत्रों में खरीफ सीजन में मक्का की खेती की जाती है, उन क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन मक्का न लें|
- अंतवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग, उड़द की खेती करें|
- फसल बुवाई के तुरंत बाद पक्षियों के बैठेने के लिए जगह हेतु 10 टी आकार की खूंटिया खेत में लगा दें|
- फॉल आर्मीवर्म को रोकने के लिए 10 से 12 फेरोमोन ट्रैप प्रति हैक्टेयर की दर से लगा दें|
- पहला छिड़काव नीम बीज गिरी सत (NSKE) 5 प्रतिशत या नीम तेल 1500 पीपीएम 5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें|
- कीट के प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था मे जैविक कीटनाशक के रूप में बेसिलस थुरिंजिएन्सिस (Bt) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी मे घोलकर छिड़क दें. ध्यान रहे कि इसका छिड़काव सुबह या शाम के समय ही करें|
- ट्रानिलिप्रोएल 5 प्रतिशत 0.4 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली की दर से प्रति लीटर पानी या थायोमेथोक्जाम 12.6 प्रतिशत प्लस लैम्ड़ा साहइलोथ्रिन मिक्चर 9.5 प्रतिशत जेड. सी. 0.25 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें|